आदर्श समाज की सार्वभौम व्यवस्था

मध्यस्थ दर्शन का एक सूत्र है, मानव जाति सही में एक है, गलती में अनेक। जैसे यदि एक करोड़ बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया जाये, सही उत्तर देते हैं तो सबका एक ही होता है, गलत हों तो करोड़ होते हैं। सही समझ के आधार पर ही सही उत्तर दिया जा सकता है। अन्यथा अनुमान या मान्यता के आधार पर ही जवाब दिया जायेगा, जिसके गलत होने की संभावना रखी ही रहेगी। वर्तमान राज्य व्यवस्था ऐसी गलती का ज्वलंत उदाहरण है। इसका आरंभ चुनाव प्रक्रिया से ही होता है। इसमें यह मान लिया गया है कि वोट देते समय वोटर गलती नहीं करेगा! इसलिए पूरे नियम–कानून और तंत्र का जोर इस पर रहता है कि सभी को स्वेच्छा से वोट डालने दिये जायें। ऐसा होने पर व्यवस्था को सफल मान लिया जाता है।

अब जब इन राज्यों और उसके आधारों की समीक्षा करते हैं तो सवालों की झड़ी लग जाती है। पहला सवाल तो यही है कि रहस्यमयी तरीके से यह कैसे मान लिया गया कि वोटर, वोट देते समय गलती नहीं करेगा! जबकि सही चुनने का सार्वभौम आधार आज तक स्पष्ट नहीं है। अभी तक व्यक्ति के सही–गलत होने का आधार उसकी धार्मिक, सामुदायिक, सामाजिक और वैचारिक मान्यताएं ही रही हैं, जो सबकी अपनी–अपनी हैं। ऐसा व्यक्ति एक के लिए सही तो दूसरे के लिए गलत होता ही है। ऐसे में विरोध बना ही रहता है। शोषण, संघर्ष, द्रोह, विद्रोह इसी का परिणाम हैं। विश्व का कोई भी राज्य इनसे मुक्त नहीं है। इनके आधार पर दूसरे से तुलना कर अपनी सफलता का दावा कर दिया जाता है। आदर्शवाद के रामराज्य और मार्क्सवाद के साम्यवाद की पहुंच भी यहीं तक थी।

अधिकतर लोग व्यवस्था के इन ढांचों से कभी संतुष्ट नहीं रहे। किसी व्यवस्था की परंपरा न बनना इसका प्रमाण है। इस समीक्षा के सार में दो बातें निकलती हैं, एक तो यह कि सदा–सदा सही रहने वाले व्यक्ति की पहचान कैसे हो, इसकी जांच का कोई तरीका आम आदमी के पास तक नहीं पहुंचा है। दूसरा या तो सफल राज्य का सही मापदंड आज तक दुनिया के सामने नहीं आया या ऐसे किसी प्रयास की तरफ दुनिया की नजर नहीं गयी है। यहां एक ऐसे ही अनुसंधानपूर्वक हुए प्रयास से परिचित कराने की कोशिश है।

यह अनुसंधान किया है अमरकंटक निवासी दार्शनिक 93 वर्षीय अग्रहार नागराज ने। उन्होंने 'अखंड राज्य, सार्वभौम व्यवस्था' का प्रारूप सामने रखा है। अभी तक प्रस्तुत मौखिक या लिखित धर्म, राज्य, अर्थ, समाज या शिक्षा संविधानों में शासन करने की नीतियां ही केंद्र में रही हैं। प्रजा को अपने अनुसार जीने–रहने के लिए विवश किया है। ऐसा न करने पर उसे पापी या अपराधी घोषित कर दंडित किया है। यही विरोध का मूल कारण रहा है क्योंकि संसार का हर व्यक्ति बिना शासित हुए स्वतंत्रतापूर्वक सही जीना–रहना चाहता है। आदमी का डिजाइन ही ऐसा है। हर व्यक्ति जन्म से जिज्ञासु, सत्यवक्ता, न्याय का याचक और सही कार्य–व्यवहार करने का इच्छुक होता है। उसे यदि इन गुणों के साथ जीने का वातावरण उपलब्ध हो तो वह न कभी झूठ बोलना चाहेगा, न शोषण करना चाहेगा, न किसी के साथ अन्याय करेगा। नैतिकता, चरित्र, मूल्य उसकी पूंजी होते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने हर सवाल का जवाब पाकर स्वयं में समाधानित रहता है। श्रमपूर्वक परिवार में समृद्धि हासिल करता है। समाज में अभयता और जीवों, वनस्पति, धरती के साथ बिना नुकसान पहुंचाए सहअस्तित्वपूर्वक

रहता है। हर व्यक्ति की मूल चाहत इतनी ही है और यही लक्ष्य भी। यही सही व्यक्ति का स्वरूप है और यही पहचान।

ध्यान देने की बात यह है कि ऐसे व्यक्ति का मूल्यांकन वह ही कर पायेगा, जो खुद सही जीता हो, गलत जीने वाला आदमी, सही का मूल्यांकन करने की योग्यता नहीं रखता, न ही इसका अधिकारी होता है। विडंबना यह रही कि अभी सही की सार्वभौम सूचना ही लोगों के पास नहीं है, इसलिए सही जीने वाले व्यक्तियों के उपलब्ध होने या वर्तमान चुनाव व्यवस्था में सामने आने की बात करना ही बेमानी है। इसलिए आवश्यकता है जो उर्जा मौजूदा ढांचों का विरोध करने में खर्च हो रही है, वह उर्जा लोगों तक सही की सूचना उपलब्ध कराने और वातावरण निर्मित करने में खर्च की जाये। इसका आरंभ भी हो चुका है, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, पंजाब, बिहार, उड़ीसा आदि में अनेक परिवार एवं संस्थान इसमें लगे हैं।

इस प्रकार जीते हुए परिवार ही मानवीय संविधान की नींव हैं। ये ही परिवार विस्तारित होकर परिवार समूह सभा का गठन करते हैं, फिर वहीं से फैलते हुए विश्व राज्य सभा तक पहुंचते हैं। यह दस सोपानीय सार्वभौम व्यवस्था है। इसके समानांतर ही इसी क्रम से एक परिवार से शुरू होकर विश्व परिवार तक अखंड समाज की परिकल्पना है। वर्तमान चुनाव प्रणाली में गलत में सही का चुनाव करना होता है जबकि इस प्रारूप में सही में से ही व्यवस्था की जिम्मेदारी लेने वाले सही व्यक्ति का स्थान प्रतिनिधि प्रणाली से सुनिश्चित होता है। **अधिक जानकारी के लिए** www.madhyasth.info **देखें**

- अजय यादव

भ्रश्टाचार से निपटने का फार्मूला

पूर्व राष्ट्पति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने पिछले वर्ष भ्रष्टाचार से निपटने के लिए फार्मूला सुझाया था। उस समय लोकपाल बिल को लेकर सरकार और अन्ना हजारे के बीच खींचतान जोरों पर थी। इसी खींचतान में इस फार्मूले की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया जबकि भ्रष्टाचार मिटाने में यह काफी मददगार साबित हो सकता है। यह फार्मूला वास्तविकता पर आधारित शिक्षा के द्वारा भ्रष्टाचार को मिटाने की बात करता है। वास्तविक शिक्षा का मतलब ही है, आदमी में आदमी होने की योग्यता पैदा कर देना। आदमी में जब यह योग्यता पैदा हो जायेगी तो वह भ्रष्टाचार कर ही नहीं सकता। वर्तमान में शिक्षा के नाम पर क्रियाओं–घटनाओं की सूचनाएं दी जा रही हैं या थोड़ी बहुत कारीगरी यानी स्किल सिखाया जा रहा है, उसमें भी केवल नौकरी करना या धन कमाना ही उद्देश्य है। जाहिर है, जब पूरी शिक्षा ही धन कमाने के लिए है तो आदमी भ्रष्ट होगी ही। ज्यादा शिक्षित ही ज्यादा भ्रष्ट हैं, यह इसका प्रमाण है।

फिर वास्तविक शिक्षा क्या है? वास्तविकता को समझना ही वास्तविक शिक्षा है। चूंकि इस अस्तित्व में समझ ग्रहण कर सकने वाली एकमात्र इकाई आदमी ही है, इसलिए पहले आदमी की ही वास्तविकता समझना जरूरी है। आदमी के जीने के आधार पर उसे समझा जा सकता है। हर आदमी अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए जी रहा है। आवश्यकताएं देखते हैं तो दो प्रकार की हैं। पहली रोटी, कपड़ा, मकान, गाड़ी या संचार साधन। ज्यादातर आदमियों के पास ये सभी चीजें पर्याप्त हैं, फिर भी वे परेशान दिखते हैं। उससे पता चलता है कि दूसरे प्रकार की भी कोई आवश्यकता है। वह है पहचान, सम्मान, विश्वास, प्रेम पाना। गौर से देखेंगे तो पहले प्रकार की आवश्यकताएं वे हैं, जो शरीर के लिए चाहिए और कोई भी व्यवसाय करने से हासिल हो जाती हैं। जबकि दूसरे प्रकार की आवश्यकताएं दूसरे आदमी की परस्परता से ही पूरी होती हैं। और वह किसी वस्तु से पूरी नहीं हो सकतीं। बस यहीं से समस्याएं शुरू होती हैं। पहली समस्या तो यह है कि दूसरे प्रकार की आवश्यकता भी है, ज्यादातर को इसकी समझ नहीं है या फिर वे चीजों का लेन–देन कर दूसरे प्रकार की आवश्कताएं पाना चाहते हैं। विश्वास, सम्मान या प्रेम तराजू में तौलकर तो मिलता नहीं। आदमी सोचता है, वह ज्यादा पैसा या नाम कमा लेगा तो लोग उसे प्रेम करने लगेंगे या सम्मान होगा। इसलिए हर कोई शोषणपूर्वक पर धन कमाने में लगा है। यही भ्रष्टाचार है। इसका कारण समझने जाते हैं तो पता चलता है कि शरीर एक दिन नष्ट हो जाने वाली चीज है, इसलिए इसका काम क्षणभंगुर चीजों जैसे, रोटी, गाड़ी, मकान आदि से चल जाता है जबकि जीवन नाम की एक वास्तविकता और है जो शरीर को चलाते हुए शरीर के साथ भी रहती है और शरीर के बाद भी। उसका काम निरंतर और असीमित वस्तुओं से ही चलता है जैसे प्रेम, विश्वास, सम्मान आदि। रोटी खाने से शरीर तृप्त हो जाता है लेकिन जीवन केवल संबंध और ज्ञान से तृप्त होता है।

एक और वास्तविकता दिखती है। दुनिया का हर आदमी संबंधपूर्वक सुखी होकर ही जीना चाहता है। दूसरे को भी सुखी करना चाहता है, जिसे अपना संबंधी मानता है, उसका पोषण और सहयोग भी करता है। जिसे संबंधी नहीं मानता उससे भयग्रस्त रहता है। इस

स्थिति में यदि कमजोर साबित होता है तो खुद शोषित होता है और यदि बलशाली है तो शोषण करता है। वर्तमान व्यवस्था में नीचे से उपर तक यही हो रहा है। छोटा कर्मचारी जनता का शोषण करता है और बड़ा अधिकारी, छोटे कर्मचारी का। इस पूरी अव्यवस्था का कारण आदमी का भयग्रस्त होना है।

क्योंकि नासमझ आदमी सदा से ही प्राण भय, मान भय, धन भय और पद भय से पीड़ित रहा है। वह हर भय से मुक्ति चाहता है। इसके लिए उसने शस्त्र, शास्त्र, जन, धन एकत्र कर सुरक्षा घेरा मजबूत करने की कोशिश की है। इनके बल पर हिंसक जानवरों और प्राकृतिक आपदाओं से तो कुछ भयमुक्ति पा ली पर आदमी की अमानवीयता का भय अभी भी बड़ी समस्या बना हुआ है। वर्तमान में आम आदमी को पुलिस का भय इसका बड़ा उदाहरण है। कुछ ऐसी ही स्थिति उन नजदीकी लोगों की है जो पड़ोसी या संगी–साथी कहे जाते हैं। कब कौन मन में ईर्ष्या पाल ले, कब अपमानित कर दे, कब नुकसान पहुंचा दे, कहा नहीं जा सकता। इससे बचने के लिए ही हर आदमी शस्त्र, शास्त्र, जन, धन एकत्र करने में जुटा है। इसी के लिए पूरी छीना–झपटी है। जो भ्रष्टाचार के रूप में दिखता है। अविश्वास, रिश्तों में टूटन, नैतिक पतन और भय का वातावरण इसके लक्षण हैं।

मौजूदा व्यवस्था और कानून रूपयों या धन के लेन–देन होने के बाद की स्थिति को भ्रष्टाचार मानते हैं जबकि यह घटना भ्रष्टाचार का फलन मात्र है। भ्रष्टाचार तो उससे बहुत पहले प्रवृत्ति के रूप में आरंभ हो चुका होता है। फिर भी सारा प्रयास कानून और दंड के भय से भ्रष्टाचार रोकने का है। बहुत सारी उर्जा और संसाधन लगाने के बाद, इसमें थोड़ी–बहुत कमी अवश्य दिखती है पर खत्म हो गया हो, ऐसा पूरी दुनिया में कहीं नहीं दिखता।

इनके विकल्प के रूप में ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है। यह प्रस्ताव मानव पर किये गये गहन अनुसंधान का परिणाम है। यह अनुसंधान किया है अमरकंटक निवासी दार्शनिक 93 वर्षीय अग्रहार नागराज ने। अनुसंधान का निष्कर्ष है कि इसका उपाय केवल संबंधों की पहचान होना ही है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जिन्होंने इस प्रस्ताव को सुनने के बाद अपने आस–पास की भ्रष्ट व्यवस्था को बदल दिया या फिर उस अव्यवस्था के समानांतर ईमानदार व्यवस्था खड़ा करने में लगे हैं। **अधिक जानकारी के लिए** www.madhyasth.info **देखें**

- अजय यादव एवं विवेक चतुर्वेदी |